IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

'वन्या' कहानीसंग्रह में आदिवासों स्त्रियों की व्यथा का चित्रांकन

मनीषा दीपक केळूसकर[1], डॉ. सुनील बापू बनसोडे[2]
शोध छात्रा[1], प्रोपेसर, हिंदी विभाग[2]
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर[1]
तुळजाराम चतुरचंद कॉलेज, बारामती[2]
keluskarswati8@gmail.com1 sunilbansode16@gmail.com2

शोध सारांश : *आदिवासी स्त्रिया समाज व्दारा हमेशा प्रताडित रही है। आदिवासी समाज की स्त्रिया निर्धन, दुर्बलता का प्रतीक, भोगवस्तू का साधन, पुरूष वर्ग के हाथ की कठपुतली मानी जाती है। आदिवासी स्त्रियों में शिक्षा का अभाव गरीबी, भुखमरी, कमजोरी पेट पालने के लिए भटकंती दिनचर्या चलाने की विवशता होती है। जिसके कारण रोजमर्रा के कष्टप्रद जीवन संघर्ष से छुटकारा नहीं मिल सकता। भोली भाली आदिवासी स्त्रिया निरक्षर होने के कारण कानुनी लिखापढी के दस्तावेजों से अनजान होती है। जिसका मुनाफा सभ्य, सुशिक्षित समाज उठाता है। अज्ञान के कारण अंधश्रद्धा के चंगुल में फँसती है। आदिवासी स्त्रियों के रंगरूप से, भाषा से, परिवेश से समाज को नफरत है परंतु उसके देह से प्रेम है।*
लेखिका मनीषा कुलश्रेष्ठ समकालीन कथासाहित्य की संवेदनशील कथाकार है। आदिवासी जनजातियों के इर्द-गिर्द का परिवेश उन्होंने खुली आँखों से अनुभव लिया है। नजदीकी से उनके जीवन-संघर्ष को देखा है। आदिवासी स्त्रियों के संघर्षपुर्ण जीवन के प्रति उनके मन में करूणापुर्ण संवेदशील उभरती है। उनकी कहानियों में पाठक के मन में आत्मीय भाव जागृत होते है। 'वन्या' यह कहानीसंग्रह आदिवासी स्त्रियों का जीवन संघर्ष समाज के सामने उजागर करने हेतु सन 2024 में प्रकाशित हुआ। इस कहानीसंग्रह की प्रत्येक कहानी आदिवासी स्त्री को केंद्रस्थान में लेकर बनी है। 'वन्या' इस कहानीसंग्रह में परिवारप्रिय आदिवासी स्त्री, परिवेश तथा जीवन से अनास्था रखनेवाली स्त्री, समाज से डरकर अंतरिक घूटन में जीनेवाली स्त्री, एवं सामूहिक अत्याचार की शिकार होती आदिवासी स्त्री की व्यथा, वेदना का ज्वलंतता के साथ चित्रण किया है।

बीज शब्द – आदिवासी, स्त्री, व्यथा, संघर्ष, आस्तित्व

1. प्रस्तावना :

आदिवासी स्त्री उसके परिवार की 'रीढ की हड्डी' है। परिवार के पालन, पोषण में हर पल उसकी उपस्थिति होती है। जल, जंगल, जमीन से उसे हमेशा संघर्ष करना पडता है। आदिवासी साहित्य में आदिवासी स्त्रियों का संघर्ष अत्यल्प मात्रा में मिलता है, परंतु वास्तविक जीवन में अपने जीवनयापन का, अस्मिता का, संघर्ष उसके आंतरिक मन में निरंतर चलता है। आदिवासी स्त्रियों को सिर्फ शोषण की नजर से देखा जाता है। उसके अधिकारों के लिए सभी दरवाजे बंद पाए गए है। यह स्त्रियाँ चूप्पी से दर्द सहती है। वह भी मूक्ति पाना चाहती है। उसके दर्द मिश्रित आसूओं में उसका जीवन बहता जाता है।
मनीषा कुलश्रेष्ठने आदिवासी स्त्री जीवन के वेदना को आइने की तरह हमारे सामने रखा है। 'दर्द सहना' यह आदिवासी स्त्रियों के जीवन की वास्तविकता है। मनीषा कुलश्रेष्ठ ने 'वन्या' कहानीसंग्रह की कथाओं में आदिवासी स्त्रियों को केंद्रस्थान में रखकर उनके दर्द को समाज के सामने लाने का सफल प्रयत्न किया है।

2. शोध प्रपत्र का उद्देश्य –

1) आदिवासी स्त्रियों का जीवनयापन करते समय मिलनेवाली व्यथा को समाज के सामने प्रस्तुत करना।
2) आदिवासी स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयत्न करना।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

3) आदिवासी स्त्रियों में शिक्षा एवं स्वास्थ के प्रति जागरूकता निर्माण करना।
4) आदिवासी स्त्रियों को समाज में सम्मान देना।

3. विषय विवेचन –

'वन्या' कहानीसंग्रह सिर्फ आदिवासी स्त्रियों की व्यथा का चित्रण नहीं करता बल्कि आदिवासियों के यथार्थ अनुभव भी उजागर करता है। आदिवासी क्षेत्र, आदिवासी जीवन, आदिवासी भाषा, जंगल से जुडी गहरी संवेदनशीलता, यह इस कहानीसंग्रह की विशेषता है। उराव, गोंड, संथाल, भील, मुंडा इस आदिवासी जनजातियों का वर्णन कथासंकलन में मिलता है। आचार्य डॉ. बळवंत कौर ने 'वन्या' कहानीसंग्रह के बारे में अपने विचार व्यक्त किए है। 'मनीषा कुलश्रेष्ठ की 'वन्या' संग्रह की सभी कहानियाँ स्त्री केंद्रित है तथा आदिवासी जीवन से जुडी हुई है। लेकिन उनमें उस तरह का विमर्श नहीं है जैसा हम आदिवासी विमर्श के अर्थ में लेते है इस संग्रह की कहानियाँ जीजीविषा की कहानियाँ है।' 1 वन्या इस कहानीसंग्रह की आठ कहानियों की प्रत्येक कहानी में आदिवासी स्त्री की व्यथा का स्वर गुँजता है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ प्रतीभा संपन्न युवा कथाकार है। पाठक उनकी कहानियों को लीन होकर पढते है। 'वन्या' का अर्थ पहाडी नदिया है। ऐसी नदिया जो उन्मुक्त होकर पहाडी प्रदेश में छलछलाकर बहती है। आदिवासी स्त्रिया भी पहाडी क्षेत्रों में बीना थके हारे घूमती है। लेखिका मनीषा कुलश्रेष्ठ के अनुसार 'आदिवासी जीवन की कथाओं को आप यूँ ही नहीं कह सकते। इसके लिए वह आदिम मुहावरा, सरल भाषाई गीतात्मकता, सजीब मौलिक सजीव दृश्यात्मकता, थिरकन, पुरखों से मिला कहन, पेडों और पशुओंसे सखा-भाव और जंगल के लिए वह चिन्ता लानी होगी।' 2

'वन्या' कहानीसंग्रह की प्रारंभिक कहानी 'नर्सरी' में आदिवासी नैनी जमीनदार के बेटे की देखभाल करने हेतु रखीजाती है। उसके सख्त हिदायत दी गई है कि सिर्फ स्नान करने के पश्चात ही वह बच्चे को स्पर्श कर सकती है। चाय बागानों में काम करती आदिवासी स्त्रिया कडी धूप में, घने जंगल में, स्थायी तौर पर मजदूर का काम करती है। उनके बच्चें वही पेडों के टहनी पर लटके पालनों में झूलते रहते है। ये आदिवासी स्त्रिया अपने काम में इतना मग्न रहती है कि मालिक की पूकार भी उन्हें सूनाई नहीं देती, मालिक के डाँट ने से भी गुस्सा नहीं होती। शोषक एवं शोषित वर्ग कहानी में नजर आता है। कहानी में सुमिता नामक लडकी आत्मनिर्भर है। वह आदिवासी स्त्रियों के बच्चों के लिए पालनाघर चलाती है। उसे सिर्फ 700 रूपयें तनख्वाह मिलती है। पाच छ पीढियों से काम करती आदिवासी महिलाओं का चाय के बागानों की दुनिया से गहरा जुडाव है। सुमिता को शहर जाना है परंतु उसने सुना है चाय बागानों को छोडकर शहर में गई लडकिया कभी वापस नहीं लौटी उन्हें शहर में ही बेचा जाता है। किशोरवयीन लडकी सुमिता को खेलन कुदने के उम्र में ही जीवन निर्वाह के लिए काम करना पडता है। कुरजां कहानी की नायिका कुरजां अपने बेटे के साथ रेगिस्तान के क्षेत्र में रहती है। कुरजां का वर्णन लेखिका के शब्दों में 'एक युवा औरत। लम्बी सतर देह, लम्बा चेहरा, उंची उठी गालों की हड्डियाँ झूलसकर गोरे से ताम्बई हो आयी रंगत। उस चेहरें पर दो बडी हरी-नीली आँखे यूं लग रही थी,जैसे मीलों फैले रेगिस्तान में पास-पास सटे दो शीतल सरोवर हो।' 3 आदिवासी स्त्री कूरजा भूखमरी से बेहाल है। बेट शिक्षा से वंचित है। गांववालों ने उसे डाकण करार दिया है। उसकी नजर से उगा हुआ धान जल जाता है, किसी गर्भवती स्त्री को उसने देखा तो उसे लडकी पैदा होगी या फिर उसका बच्चा ही मर जाएगा ऐसी अंधश्रद्धा आदिवासी औरतों में आज भी है। वैज्ञानिकता से भरे आधुनिक समाज में आज भी जादूटोना, भूत निकालता, जैसी बातों पर विश्वास रखती है। गाँववाले उसका शारीरिक शोषण कर, उसके बेटे को बहुत पीटते है। कुरजा गाँव छोडकर बेटे के जीवन के लिए दूसरे गाँव रातोरात चली जाती है।

'नीला घर' इस कहानी में किशोरी लडकी मिति चाके का स्वयं के आत्मरक्षा के लिए संघर्ष दिखाया है। याबोम और तोसिरो ढोनों उसे किमत देकर खरीदना चाहते है। वह आक्रोश करती है। मेरे लिए मूल्य देने के लिए मैं कोई वस्तू नहीं हूँ अनचाहा विवाह होने के पश्चात भी घर गृहस्थि संभालने में व्यस्त रहती है। 'एक थी लीलण' यह आदिवासी युवती की वेदना का आक्रोश करती कहानी है। लीलण के साथ सामुहिक अत्याचार होना है। वह पल-पल आदमी के भेस में हैवानों से छूटकारा पाना चाहती है। उसके आक्रोश की खरोंचों उसकी मृत आत्मा पर भी पडती है। उसकी मृत्यू के बाद उसके पिता भी उसकी लाश को पहचानने से इन्कार करते है। 'अवक्षेप' कहानी सरकारी आदिवासी लडकियों के छात्रावास के अंदर की दरिंदगी को बयान करती है। आदिवासी लडकियों को परिवार में पढनें नहीं दिया जाता। गरीबीवश यह लडकिया आदिवासी छात्रावासों में रहती है। सरकार की तरफ से आनेवाली सुविधाओं को गायब किया जाता है। होस्टल की लडकियों से देह विक्री का व्यवसाय करवाती है। 'बेनु' नामक छात्रा अपने साथ

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

घटी घटना बताती है 'पैले के दो महीने की छातरवृत्ती इंचारज ने अटका रखी है। पांच सौ पुरे कभी देता ही नहीं। खा पी के दो सौ टिकाता है, फिर भी चार सौ बनते है। आदिवासी छात्राओं का आर्थिक, शारीरिक शोषण प्रशासन व्यवस्था के लोगों व्दारा ही होता है।' 4

'जमीन' यह राजस्थानी आदिवासी परिवार से जुडी कहानी है। अपनी 'जमीन' बचाने के लिए सुमरन इस अकेली आदिवासी लडकी का संघर्षरत जीवन इस कहानी के माध्यम से सामने आया है। जमीन पुश्तैनी है इसलिए सुरवन को उसके अपनों व्दारा बार बार धमकाया जाता है। अपनी बचपन की सहेली मुकुंदी से सूरमन कहती है अपनी ही जमीन बचाने के लिए आस्तिव के लिए आदिवासी स्त्री सुरमन की व्यथा से प्रकट होता है।

'आर्किड' यह कहानी मणिपुर के आदिवासी समाज की व्यथा का चित्रण करती है। भारतीय पूर्वेत्तर प्रदेश आदवासी सामाज में पर्यावरण की लूट हो रही है। प्रिश्का यह आदिवासी लडकी इस लूट के प्रति जाग्रत हो चूकी है। वह कहती है हमारी अपनी प्राकृतिक संपदा हमारी अपनी नहीं रहीं। 'यह जंगल पहाड हमारी खेतिया... पशु और हमारी औरतें कुछ सुधारना ही नहीं है तो क्रांति ही आखिरी इलाज है।' आदिवासी स्त्री की यह वेदना है कि उसे सीधे तरीके से कोई भी बात प्राप्त नहीं होती। हर चीज के लिए उसे बगावत करनी पडती है।5

'रक्स की घाटी और शब-ए-फितना' इस कहानी में प्रकृति की गोद में जीवनयापन करते वाले संगीत नृत्य कलाकार आदिवासी स्त्रियों की कला को उजाड दिया जाता है। डरा-धमकाकर वादियोंसे भगाया जाता है। अपनी आँखों के सामने ही अपनी पुश्तैनी कला की मौत आदिवासी स्त्री की जीवनभर की व्यथा बनती है। अपनी धरती, अपना घर, अपनी कला छोडकर आदिवासी स्त्री गजाला की व्यथा सुज्ञ पाठक का ह्रदय पिघलाने को विवश करती है।

आदिवासियों में कानून के खिलाफ लडने की शक्ति नहीं होती। उनकी व्यथा को कभी इन्साफ नहीं मिलता। उन्हें पढाना, कला सीखाना यह शिक्षा चोरी-से लेनी पडती है। गुलवासा के पिता अपनी पत्नी को डॉटते है। उसपर उनकी पत्नी का जबाब हैं - 'मैं क्या जवाब दूँ ? औरतों और बच्चियों को फुसफुसा कर पढाते हुए मैं थक गई हूँ.... उन्हें क्या-क्या नहीं समझाती, यह मजहबी कानून और उसका सही मतलब। मगर सुननेवालों के कान बहरे हैं और आँखे उजाड, जबाने उमेठ दी गई है.... मेरी हिम्मत टूट रहीं है अब।' 6

मनीषा कुलश्रेष्ठ के 'वन्या' कहानीसंग्रह में आदिवासी स्त्रियों को समाज से मिले अन्याय के विरूद्ध आपत्ति उठाई है।

4. निष्कर्ष

आदिवासी स्त्रियों के जीवन में हर्ष, उल्लास का सदैव अभाव है। उनके जीवन में यातना परेशानी ही मिलती है। आदिवासी स्त्रियों का जहा भी उल्लेख आता है वहा उदासी की परछाई भरी आदिवासी स्त्री नजर आती है। आदिवासी स्त्री का प्रकृति से गहरा रिश्ता है। आदिवासी स्त्रियों पर लेखन कर मनीषा कुलश्रेष्ठ जी ने सामाजिक विचारधारा में परिवर्तन करने की कोशिक की है। आदिवासी स्त्रिया भी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही है।

संदर्भ

1. bekhouf.com
2. मनीषा कुलश्रेष्ठ 'वन्या' कहानीसंग्रह राजपाल एन्ड सन्स प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करण-2024 पुस्तक भूमिका से उद्धृत
3. देखें 'वन्या' कहानीसंग्रह पृ. क्र. 93
4. देखें वहीं पृ. क्र. 123
5. देखें वहीं पृ. क्र. 90
6. देखें वहीं पृ. क्र. 142